

AK. 2, 4, 5, 31. 3, 4, 8. H. 1191. an. 3, 197. MED. n. 38. Suçr. 2, 503, 21.
— 2) *Pistia Stratiotes* Lin. (कुम्भी, पृष्णि) H. an. MED.

कतोप (कद् + तोप) n. ein berauschendes Getränk TRi. 2, 10, 14.

कत्त्रि (कद् + त्रि) pl. = कुत्सितास्त्रयः schlechte Drei P. 6, 3, 101,
VArtt. Vop. 6, 92. Davon कत्त्रियक nach P. 4, 2, 95.

कत्थ, कथ्यते (act. s. u. वि) Dhātup. 2, 36 (ब्राधायाम्. 1) *prahlen*: किं
ते कत्थितेन (wozu nützt dein Prahlen) च मानुष । कथितकर्मणा सर्व क-
त्थेयाः MBh. 1, 5995. 3, 2819. MBh. in BENF. Chr. 24, 39. R. 6, 36, 73.
Bhāg. P. 5, 24, 16. कत्थिष्यते न कः BHATT. 16, 4. त्वं कत्थसे महाराज स-
त्यवादी du *prahst* damit, dass du wahrhaft seiest R. 2, 13, 3. — 2) *lobend hervorheben, loben*: पौरुषं पुरुषेषु च । कथ्यमानो ऽभिनिर्णीय MBh.
4, 1252. कथयन्कथसे च यौ 16, 135. कथसे यच्च वीर्येण रामम् R. 3, 55,
8. — 3) *tadelnd hervorheben, tadeln, herabsetzen*: ये वा — कथ्यन्त उ-
ग्रपुरुषं निरतं श्मशाने Bhāg. P. 8, 7, 33.

— आ *prahlen*, s. आकथन.

— वि 1) *prahlen* MBh. 3, 11635. 4, 1554. R. 6, 36, 42. को विकत्थितुम-
र्हति MBh. 2, 2533. जनस्य गोप्तास्मि विकत्थयमानः Bhāg. P. 5, 12, 7. 7, 8,
12. यते सभामध्ये वज्रवाचा विकत्थितम् । न मे युधि समो ऽस्तीति तदिदं
समुपस्थितम् ॥ MBh. 4, 1923. mit dem instr.: गान्धारविद्यया हि त्वं रा-
जमध्ये विकत्थसे 2, 2529. 17, 71. R. 2, 7, 14. act.: को विकत्थेद्विचक्षणाः
MBh. 4, 1563. — 2) *lobend hervorheben, viel Lärm von Etwas (acc.)*
machen: प्राकृता रूक्तात्मनो लोके ऽस्मिन्कुलोपसनाः । निरर्थकं विक-
त्थसे यथा राम विकत्थसे ॥ R. 3, 33, 21. — 3) *Jmd (acc.) herabsetzen,*
mit Etwas (instr.) demüthigen: सदा भवान्पात्नस्य गुणैस्मान्विकत्थ-
से । न चार्जुनः कलापूर्णा मम दुर्बोधनस्य च ॥ MBh. 4, 1299. — *caus. de-*
demüthigen: विकत्थयित्वा राजानं ततः प्राह Draup. 9, 10.

कत्थन (von कत्थ्) 1) adj. *prahlend* MBh. 3, 15038. R. 4, 6, 10. अकत्थन
Indr. 4, 11. — 2) n. *das Prahlen* R. 3, 33, 23. बाहुर्वीर्येण कत्थनम् MBh.
3, 8664. अकत्थन Suçr. 2, 363, 13. Auch कत्थना Sch. zu BHATT. 16, 4.

कत्थय (1. कद् + पय von पी = प्या) adj. *hoch aufschwellend* Nir. 6,
3. त्वं चिदित्या कत्थयं शयानम् (जयान) RV. 5, 32, 6.

कत्त्र्. कत्त्रयति *lösen* Dhātup. 33, 60. — Vgl. कत्त्र्. कर्त्.

कत्सवर n. *Schulter* Çabda. im ÇKDr.

कथक (von कथ्य्) 1) adj. *erzählend*: अतिपूर्वकथक Çānti. 2, 27. subst.
Erzähler, dessen Amt das Erzählen ist MBh. 1, 7778. 13, 1586. Kathās.
10, 2. Nach TRi. 4, 1, 124 und Hān. 123: *Hauptchauspieler* (एकनट).
— 2) m. N. pr. eines Mannes *gaṇa* गर्गादि zu P. 4, 1, 105. PRAVARĪDHJ.
in Verz. d. B. H. 36, 2 v. u.

कथंकथिक (von कथम् + कथम्) adj. *der da beständig fragt* TRi. 3,
1, 17. Bhūrip. im ÇKDr. Davon nom. abstr. कथंकथिकता ein Hin- und
Herfragen H. 263.

कथंकारम् (कथम् + absol. von कर्, करोति) adv. *auf welche Weise?*
P. 3, 4, 27. Naish. 17, 127.

कथन (von कथ्य्) n. *das Erzählen, Berichten, Mittheilen* Suçr. 1, 316,
4. BHART. 2, 54. 59. PAÑKAT. 7, 16. I, 13. II, 191. HIR. 30, 18.

कथनीय (wie eben) adj. 1) *zu erzählen, der Mittheilung würdig*: त-
स्मै महेन्द्रेणैकिया कथनीया कथा त्वया Kathās. 5, 131. भगवतः कथनीया-
कर्मणाः Bhāg. P. 1, 18, 10. 3, 13, 47. धर्मकामार्थमोक्षाणां कथनीयकथाय

II. Theil.

(शिवाय) MBh. 12, 10388. — 2) *zu benennen*: सा कथनीया चम्पकमाला
Çrut. 16.

कथम् (von 1. क) adv. *wie? auf welche Weise? woher?* P. 5, 3, 25. Vop. 7,
110. कथं शैक कथा यय RV. 5, 61, 2. कथं रसाया अतः पयोसि 10, 108, 1.
कथं मेहं असुरायाववीरिह AV. 5, 11, 1. 7, 76, 5. 8, 9, 19. 20. कथं वातो ने-
लेपति कथं न रमते मनः 10, 7, 37. कथं न इदं मनुष्यैरनभ्यारोह्यं स्यात् Çat.
Br. 4, 6, 2, 1. 2. कथं हि करिष्यसि 12, 9, 2, 7. कथं दर्शपूर्णमासावित्याद्येन
च पुरोडाशेन चेति ब्रूयात् 14, 2, 2, 48. — कथं चेदं त्वयि कर्म समाहितम् N. 22,
10. कथमेतत् *wie verhält es sich damit?* Çāk. 14, 13. HIR. 9, 3. u. s. w.
कथमिदानीम् *wie nun? was ist jetzt zu thun?* Çāk. 100, 20. कथं मारा-
त्मके त्वयि विश्वासः *wie kann Vertrauen zu dir stattfinden?* HIR. 10, 18.
अहम् — कथं न विश्वासभूमिः 22. सुरतितानि वेश्मानि प्रवेष्टुं कथमुत्सहे
N. 3, 10. तद्य भट्टारकवारे कथमेतान्दत्तैः स्पृशामि *wie kann, wie darf*
ich berühren? HIR. 21, 21 (vgl. P. 3, 3, 143. Vop. 23, 9). कथं राज्ञः सुतानेन
कथ्यते मयि जीवति VId. 98. कथमुक्ता तथा सत्यं सुतामुत्सृज्य मां गतः N.
11, 4. VId. 8, 2. कथं स्यातां सुतो वालो भवेयं कथं चारुम् *wie würde den*
Kindern sein und wie mir? BRĀHMAN. 2, 9. निश्चयं नाधिगच्छामि कथं मु-
च्येयम् MBh. 13, 4836. कथं तत्र विभागः स्यात् M. 9, 122. 10, 82. 12, 108.
N. 5, 12. 10, 17. VId. 108. कथमुत्सृज्य गच्छेयमहं त्वं निर्गन्तव्ये *wie könnte*
ich wohl fortgehen? d. i. ich wäre nicht im Stande fortzugehen N. 9, 27
(vgl. P. 3, 3, 143. Vop. 23, 9). M. 9, 130. Daç. 1, 24. सानुबन्धाः कथं न स्युः
संपेदा मे निरापदः Ragh. 1, 64. कथमिदानीमेते मम पुत्रा गुणवन्तः क्रिय-
ताम् *auf welche Weise sollen jetzt meine Söhne zu tugendhaften Men-*
schen gemacht werden? HIR. 5, 20. कथं बुद्धा भविष्यति *wie wird ihr sein,*
wenn sie erwacht? N. 10, 22. इमाम् — कथं वत्स भरिष्यामि *wie werde*
ich sie ernähren? Daç. 2, 34. N. 10, 2. 23. 19, 5. Çāk. 66, 18. तमस्तपति
धर्मशो कथमाविर्भविष्यति *wie könnte Finsterniss entstehen?* 111. PAÑ-
KAT. 193, 11. HIR. I, 47. 17, 16. कथं मृत्युः प्रभवति वेदशास्त्रविदाम्
wie kommt es, dass der Tod Gewalt hat über ...? M. 5, 2. N. 4, 5, 12,
9. Daç. 2, 9. Çāk. 89, 10. HIR. I, 73. 20, 19. 27, 18. Ragh. 3, 44. कथमवग-
म्यते *woher schliessest du dieses?* Çāk. 98, 23. कथं गच्छति *wie? sie*
geht? Çāk. 16, 12, v. l. कथमिदं सा कण्डवद्विता 9, 12. 80, 3, v. l. 89, 2.
102, 17. 104, 8. कथं मामेवोद्दिशति 94, 1. 90, 18. Ganz abgeschwächt, eine
Frage einleitend: कथं तेनामृता स्याम् *würde ich dadurch unsterblich*
werden? Bāh. Ān. Up. 2, 4, 2. कथमिदानीमात्मानं निवेदयामि । कथं वा-
त्मापहारं करोमि Çāk. 13, 21. Am Anf. eines adj. comp. gleichbed. mit
किम्: कथंरूपः कथंवीर्यः किंकर्मा च स राज्ञः R. 3, 73, 9. 5, 12, 3. 6, 99,
15. कथंप्रमाणः (so ist zu lesen) 1, 22, 12. Die Lexicographen: कथं प्रमे
प्रकार्थं संधमे संभवे ऽपि च H. an. 7, 38. कथं कुर्ये च गर्हायो प्रकार्थं च
संभवे । प्रमे संभावनायो च MED. avj. 58. कथम् in Verbindung mit an-
dern Partikeln: 1) कथमिव *wie so?* Çāk. 8, 2. 21, 22. 83, 13. 104, 2. *wo-*
her wohl? 106, 3. MĀKĀH. 125, 15. — 2) कथं नाम *wie — woh!* PAÑKAT. 197,
19. कथं नाम तत्रभवान्धर्ममत्यक्ष्यत् P. 3, 3, 143, Sch. — 3) कथं नु *wie —*
wohl? ते देवा अकामयन्त कथं नु न इदं पुनरागच्छेदिति Çat. Br. 4, 6, 4, 17.
14, 4, 2, 6. 6, 4, 3. कथं नु तौ *wie mag es ihnen wohl gehen?* N. 17, 19. कथं नु
ज्ञातसंकल्पः स्त्रियमुत्सृक्ते पुमान् । परार्थमीदृशं वक्तुम् 3, 8. Ragh. 2, 54.
कथं नु तम् — कर् विहायसि निमग्नममसि *wie konntest du (ein Ring wird*
angeredet) diese Hand verlassen und in's Wasser sinken? Çāk. 140.